ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 283-287**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

देवरिया जनपद में भूमि उपयोग प्रतिरूप का स्थानिक एवं कालिक वितरण प्रतिरूप

1.मृदुला वर्मा, 2. डॉ0 दुर्गावती यादव

1.शोध अध्येत्री, 2. सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received-15.12.2024, Revised-21.12.2024, Accepted-26.12.2024 **E-mail : aaryvart2013@gmail.com**

सारांशः आज देश के आर्थिक विकास के लिए जनसंख्या वृद्धि एक चुनौती के रूप में सामने आयी है। भूमि एक ऐसा संसाधन है, जिसकी मात्रा सीमित है, साथ ही मानव जीवन का अस्तित्व बनाये रखने में इसका सर्वाधिक योगदान है। प्रकृति ने हमें अनेक संसाधन उपलब्ध कराये हैं, यदि इन संसाधनों का उपयोग विवेकपूर्ण तथा मितव्ययता पूर्ण ढंग से किया जाय, तो निश्चित रूप से अनेक विकराल समस्याओं से भी निपटा जा सकता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के भूमि उपयोग के स्थानिक एवं कालिक स्वरूप का अध्ययन किया गया है. जिससे आगामी नियोजन हेतु रूपरेखा तैयार की जा सके। प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक आंकडों पर आधारित है। आंकड़ों का संकलन वर्ष 1993–94 एवं 2023–2024 से प्राप्त जिला सांख्किीय पुस्तिका, कृषि विभाग एवं भू–अभिलेख कार्यालय, देवरिया से प्राप्त किया गया है। अध्ययन हेतु जिले के सभी विकासखंडों को इकाई माना गया है।

कुंजीभूत शब्द– आर्थिक विकास, जनसंख्या वृद्धि, मानव जीवन, प्रकृति, संसाधन, मितव्ययता, विकराल, प्राकृतिक संसाधन, आदिकार्ल।

प्रस्तावना – भूमि एक आधारभूत प्राकृतिक संसाधन है, जिस पर सभी आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्य सम्पन्न होते हैं। भूमि आदिकाल से लेकर अद्यतन निरंतर मानवीय इतिहास को प्रोत्साहन देती रही है। देश के किसी भू–भाग में रहने वाला प्रत्येक मानव अपने दैनिक आवश्यकता की पूर्ति भूमि के विभिन्न उपयोगों द्वारा प्राप्त करता है। वास्तव में, भूमि उपयोग मानव पर्यावरण एवं प्रकृति का वर्णन है, जो कि भौतिक जलवायुविक और मिट्टी संबंधी परिस्थतियों के साथ मानव किया–कलापों, जो भूमि को प्रभावित करते हैं. से सीधा सम्बन्धित है (Vanzetti)। भूमि उपयोग वह अध्ययन है, जिसमें मानव द्वारा उत्पादित वस्तु के साथ–साथ मानवीय कियाकलापों का अध्ययन है (Clawson1962)। प्रकृति में उपलब्ध सभी संसाधनों में भूमि सबसे शक्तिशाली एवं उत्पादक कारक है। मानवीय सभ्यता और उसकी आवश्यकताओं में परिवर्तन के अनुसार भूमि उपयोग के स्वरूप में भी परिवर्तित होते रहते हैं, जिसमें परोक्ष रूप से कृषि विकास की अवस्थाएं अंकित होती रहती है।

वर्तमान में बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भूमि से अधिकतम लाभ प्राप्ति हेतु भूमि उपयोगिता की समस्या एवं रणनीति में भूमि संसाधन उपयोगिता का अध्ययन एक मुख्य बिन्दु है। यद्यपि भूमि उपयोग शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सावर (1919) जोन्स एवं फिन्च (1925) डडले स्टॅम्प (1931, 1939), शफी (1960), आदि भूगोलवेत्ताओं ने भूमि उपयोग से संबंधित अध्ययन किये है। किसी क्षेत्र में कृषि विकास हेतु शुद्ध बोये गये क्षेत्र की अपेक्षा कुल फसली क्षेत्र का अधिक होना फसल गहनता की मात्रा को प्रदर्शित करता है। अतः शस्य गहनता एवं भूमि उपयोग का धनात्मक सहसंबंध होता है. माजिद हुसैन, 2004। भूमि उपयोग से संबंधित इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले की भूमि उपयोग के स्थानिक एवं कालिक स्वरूप का अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य – प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले की भूमि उपयोग के स्थानिक एवं कालिक स्वरूप का विश्लेषण करना है। भूमि उपयोग में परिवर्तन हेतु जिले के विकासखण्डों को इकाई का आधार मानकर मूल्यांकन किया गया हैं ताकि आने वाले समय में नियोजन हेतु रूपरेखा तैयार की जा सके।

अध्ययन क्षेत्र – उत्तर प्रदेश राज्य के पूर्वी भाग में स्थित जिला देवरिया (26° 06′ से 26° 45′ उत्तरी अक्षांश, 83° 29′ से 84° 11′ पूर्वी देशान्तर) 2538 वर्ग कि. मी. क्षेत्र में विस्तृत है। जिले की समुद्र सतह से ऊँचाई 76.14 मीटर है। 2011 की जनगणना के अनुसार, जिले की जनसंख्या 3100946 है, जिनमें पुरुष 49.47 प्रतिशत एवं महिलाओं का प्रतिशत 50.03 है। अध्ययन क्षेत्र की कुल साक्षरता 73.53 प्रतिशत है। सरयू (घाघरा) नदी इस क्षेत्र की मुख्य नदी होने के कारण कृषि भूमि उपयोग एवं कृषि विकास की संभावनाये अधिक हैं। जिला 05 तहसील तथा 16 विकासखण्डों में विभाजित है। जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्र में सकल बोया गया क्षेत्र 87.93 प्रतिशत जिसमें शुद्ध बोये गये क्षेत्र 79.48 प्रतिशत, 34.38 प्रतिशत द्विफसली क्षेत्र वहीं 73.89 प्रतिशत सिंचित क्षेत्र के अंर्तगत है।

विधितंत्र – प्रस्तुत शोध पत्र मूलतः द्वित्तीयक आंकड़ों पर आधारित है। आंकड़ों का संकलन वर्ष 1993–94 एवं 2023–2024 से प्राप्त जिला सांख्यिकीय पुस्तिका, कृषि विभाग, एवं भू–अभिलेख कार्यालय, देवरिया से प्राप्त किये गये है। जिले के भूमि उपयोग के स्वरूप में परिवर्तन के तुलनात्मक अध्ययन हेतु विकासखण्ड स्तर पर इनका कालिक (वर्ष 1993–94 एवं 2023–24) विवेचन किया गया है। विश्लेषित प्राप्त मूल्यों का उद्देश्यानुरूप, सारणीयन, मानचित्र एवं ग्राफ का प्रयोग किया गया है।

भूमि उपयोग प्रतिरूप – अध्ययन क्षेत्र की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। किसी भी क्षेत्र की भूमि का सूचीबद्ध विधि से किया जाने वाला उपयोग ही भूमि उपयोग हैद्य इस प्रकार उपयोग द्वारा भूमि की क्षमताओं का निर्धारण किया जाता है। भूमि उपयोग मानव एवं पर्यावरण के साथ समायोजन है। भूमि उपयोग जहां प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक उपादानों के संयोग का प्रतिफल है वहीं राजनीतिक कारक में शासन द्वारा निर्धारित नीतियों से भूमि उपयोग में परिवर्तन निश्चित है। जिले में भूमि उपयोग स्वरूप में परिवर्तन का विवरण सारणी–1 से स्पष्ट है।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

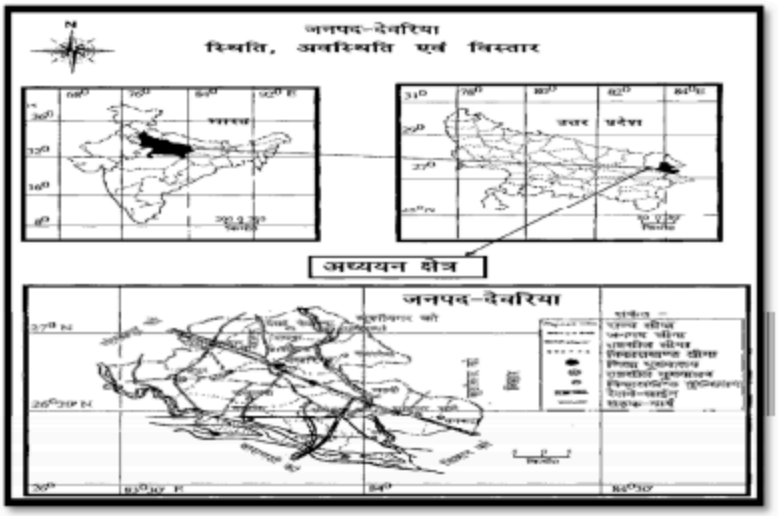

परिवर्तित भूमि उपयोग प्रतिरूप – वर्ष 1993–94 की तुलना में हुए भूमि उपयोग परिवर्तन सारणी–1 में दिखाया गया है। सारणी –1 के अनुसार भूमि उपयोग में होने वाले त्रिदशकीय परिवर्तन 1993–94 की तुलना में 2023–24 में कुल बोये गये –0-9% कमी वहीं कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि में 2-64% की वृद्धि देखी गई। यह परिवर्तन भूमि प्रबन्धन, जिले में परिवहन, आवास एवं उद्योग से संबंधित विकास कार्यों द्वारा संभव हुआ है। विकासखण्ड स्तर पर भूमि उपयोग के स्वरूप में तीस वर्ष में परिवर्तन के स्वरूप सारणी कमांक –2 से स्पष्ट है।

सारणी –1 जनपद देवरिया : भूमि उपयोग में परिवर्तन प्रतिरूप (प्रतिशत में) –

क्रमांक	भूमि उपयोग	वर्ष 1993–94 क्षेत्रफल हे0)	वर्ष 1993–94 (प्रतिशत में)	वर्ष -2023 24 क्षेत्रफल हे0	वर्ष 24-2023 प्रतिशत में	वर्ष 1993–94 एवं 2023–24 के आधार पर परिवर्तन (क्षेत्रफल में)	वर्ष 1993–94 एवं 2023–24 के आधार पर परिवर्तन (प्रतिशत में)
1	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	252141	100	249376	100	–2765	–
2	वन क्षेत्र	9	0ण्03	261	0ण्10	+252	,+0.097
3	कृषि बेकार भूमि	3270	1ण्03	1846	0ण्74	–1424	–0.29
4	वर्तमान परती भूमि	9252	3ण्67	9501	3ण्81	+249	,+0.14
5	अन्य परती भूमि	1037	0ण्41	2307	0.93	,+1270	,+0.52
6	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	2270	0ण्90	1764	0.71	–506	.–0.19
7	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	30783	12ण्21	32372	12ण्98	,+1589	,+0.77
8	चारागाह	71	0ण्03	87	0.04	,+16	,+0.01
9	उद्यान एवं बाग	2731	1ण्08	3064	1.23	+333	,+0.15
10	शुद्ध कृषित भूमि	202718	80ण्40	198174	79ण्48	–4544	–0.92

स्रोत : जिला सांख्यिकी पत्रिका, देवरिया (1993–94 एवं 2023–24)

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

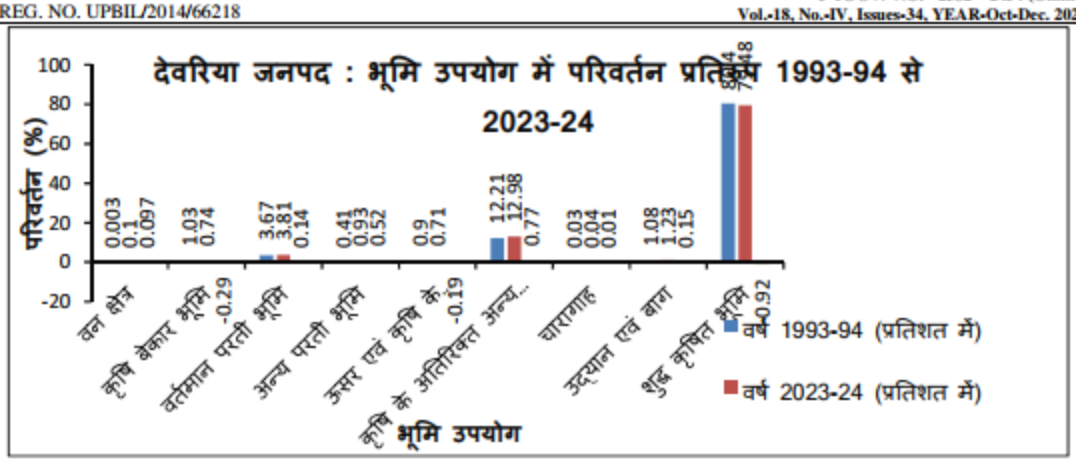

क्रमांक	विकासखण्ड	वन	कृषि योग्य बेकार भूमि	वर्तमान परती भूमि	अन्य परती भूमि	ऊसर एवं कृषि के लिए अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त भूमि	चारागाह	उद्यान एवं झाड़ियाँ	शुद्ध कृषिगत भूमि
1.	गौरी बाजार	0.06	0.80	0.89	0.67	0.18	1.48	0.04	1.06	1.45
2.	बैतालपुर	0.10	0.82	2.21	0.55	0.04	1.42	0.02	0.06	0.85
3.	देसई देवरिया	0.04	2.49	1.23	0.01	0.17	2.98	0.00	0.04	0.82
4.	पथरदेवा	0.15	0.65	0.24	0.62	1.10	2.28	0.00	0.21	0.86
5.	रामपुर कारखाना	0.41	1.05	0.65	0.54	0.04	2.65	0.01	0.62	1.26
6.	देवरिया सदर	0.07	1.24	1.89	0.32	0.01	2.54	0.02	0.01	0.19
7.	रुद्रपुर	0.05	0.64	5.88	1.05	0.19	2.82	0.02	0.61	2.16
8.	भलुअनि	0.05	0.94	0.36	0.63	0.59	4.08	0.02	0.35	3.97
9.	बरहज	0.11	0.89	3.46	0.36	0.33	4.55	0.04	0.55	1.19
10.	भटनी	0.20	0.73	3.33	0.38	0.05	3.32	0.02	0.42	6.85
11.	भाटपार रानी	0.07	0.55	0.04	0.80	0.04	4.32	0.03	0.60	5.21
12.	बनकटा	0.17	1.41	1.40	0.65	0.21	4.51	0.00	0.80	5.92
13.	सलेमपुर	0.04	0.32	1.90	0.34	0.16	1.33	0.02	0.21	3.34
14.	भागलपुर	0.03	1.30	0.23	0.91	0.53	2.57	0.03	0.95	2.84
15.	लार	0.05	3.50	7.38	0.48	0.06	11.13	0.00	0.72	0.95
.16	तरकुलवा *	0.00	0.01	0.37	0.66	0.73	1.04	0.03	0.22	0.96

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

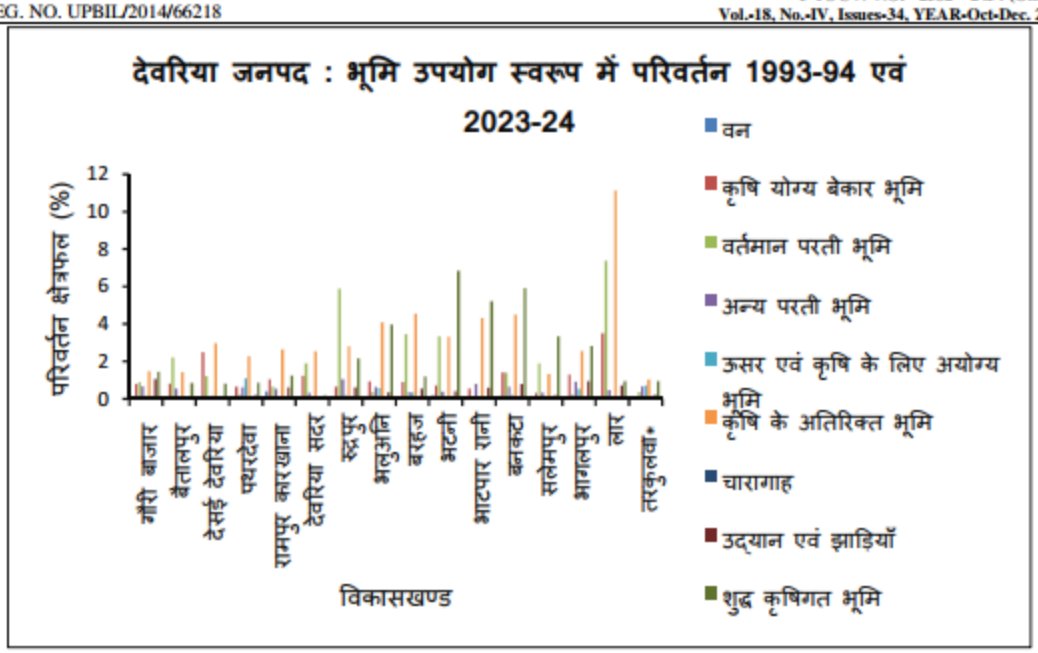

वन क्षेत्रफल – वर्ष 1993–94 की तुलना में 2023–24 में वनभूमि के क्षेत्र में 0.097 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जिले के विकासखण्ड स्तर पर वनभूमि के क्षेत्र में लगभग सभी विकासखंडों में सामान्य वृद्धि देखी गई है।

कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि – ऐसी भूमि जो प्राकृतिक रूप से ऊसर भूमि, कृषि के लिए अयोग्य एवं अन्य उपयोग में लायी गई भूमि यह वह भूमि होती है जिसमें सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक भू–दृश्यों के अनेक महत्वपूर्ण तत्वों में अधिवास, परिवहन एवं संचार के साधन, सिंचाई के साधन, उद्योग एवं बाजार निर्माण के क्षेत्र उपयोग में लायी जाती है। जिले में 1993–94 पर आधारित 2023–24 में 0.77 प्रतिशत में वृद्धि प्राप्त हुई वहीं अध्ययन क्षेत्र के इकाई स्तर पर देखा जाय तो कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि में सर्वाधिक वृद्धि देवरिया सदर विकासखण्ड में प्राप्त हुआ। उल्लेखनीय है कि जिला देवरिया में जनसंख्या का भार अपेक्षाकृत बढ़ा है परिणामस्वरूप देवरिया सदर विकासखण्ड में नगरीय क्षेत्र अधिवास, परिवहन एवं बाजार जैसे क्षेत्रों के विकास में वृद्धि वहीं सबसे कम लार एवं बरहज विकासखण्ड में नदी एवं बाढ़ प्रभावित क्षेत्र के कारण प्राप्त हुआ है।

परती के अतिरिक्त अन्य अकृषित भूमि – भूमि उपयोग के अंर्तगत इस प्रकार की भूमि के क्षेत्र में वर्तमान एवं भविष्य की रूपरेखा नियोजित कर निर्धारित की जाती है। इस प्रकार की भूमि में योजनाबद्ध वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से भावी सम्भावनाओं को ध्यान में रखते हुए कृषि विकास हेतु उपयोग में लायी जाती है। वर्तमान में इस प्रकार की भूमि तीन प्रकार से कृषि योग्य बंजर भूमि, वृक्ष, झाडियां, उद्यान एवं चारागाह भूमि विभाजित है। तुलनात्मक रूप से तीस वर्ष पूर्व की तुलना में वर्ष 2023–24 में जिले में 1. 04 प्रतिशत कमी देखी गई। वस्तुतः इस श्रेणी के कमी का कारण कृषि क्षेत्र में विस्तार के फलस्वरूप प्राप्त हुआ है। जिले में इस श्रेणी की भूमि में सर्वाधिक कमी देवरिया सदर, देसई देवरिया, बैतालपुर विकासखण्डों में प्राप्त हुआ है।

परती भूमि – परती भूमि के अंर्तगत वे सभी भूखण्ड सम्मिलित है जिन पर पहले कृषि की जाती थी किन्तु पिछले पांच वर्षों से अस्थायी रूप से उन पर फसलें नहीं उत्पादित की गई है। परती भूमि दो वर्गों में रखी जाती है। चालू परती जिसमें केवल चालू वर्ष में ही कृषि नहीं की गई है। दूसरी पुरानी परती पिछले पांच वर्षों से अधिक समय से फसलें नहीं ली गई है तो उसे इस वर्ग के अंर्तगत वर्गीकृत करते हैं। इसका प्रमुख कारण कृषक द्वारा साधनों की कमी, सिंचाई सुविधाओं की कमी, मिट्टी अपरदन आदि कारणों से कुछ समय के लिए परती छोड़ दी जाती है। परती भूमि एवं निराफसली क्षेत्र से घनिष्ठ संबंध पाया जाता है। सभी भौगोलिक अनुकूल दशाएं उपलब्ध होने पर बोये गये क्षेत्र का विस्तार किया जा सकता है। जिले में 2023–24 के दशक में कुल कृषि के क्षेत्र में कमी प्राप्त हुई वहीं निराफसली क्षेत्र में वृद्धि देखा गया। विकासखण्ड स्तर पर देखा जाय तो परती भूमि का विस्तार लार एवं रुद्रपुर विकासखण्डों में अधिक देखी गई जबकि सबसे कम तरकुलवा विकासखण्ड में प्राप्त हुई है।

शुद्ध कृषिगत भूमि – इसे निराफसली क्षेत्र भी कहते हैं। कृषि विकास में इस प्रकार की भूमि का सर्वाधिक महत्व है। वर्ष 1993–94 में अध्ययन क्षेत्र में 80.40 प्रतिशत शुद्ध बोया गया क्षेत्र के अंर्तगत था, जो वर्ष 2023–24 में घटकर 79.48 प्रतिशत की कमी प्राप्त हुई। इस प्रकार निराफसली क्षेत्र में कमी होने से कृषि योग्य पडती भूमि, अकृषित भूमि की कमी को दर्शाता है। सारणी क.–2 के अनुसार 2023–24 के वर्षों में भटनी विकासखण्ड में सर्वाधिक क्षेत्र 6.85 प्रतिशत में वृद्धि होने का कारण सिंचाई सुविधाओं में होना है, जबकि देवरिया सदर, देसई देवरिया एवं बैतालपुर विकासखण्डों में कमशः 0.19, 0.84 एवं 0.85 प्रतिशत वृद्धि प्राप्त हुई। इसका प्रमुख कारण परती भूमि के क्षेत्र में वृद्धि होना इंगित करता है।

निष्कर्ष – अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 1993–94 की तुलना में वर्ष 2023–24 में भूमि उपयोग के क्षेत्र में कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि में 0.77 प्रतिशत एवं निराफसली क्षेत्र में 0.92 प्रतिशत वृद्धि देखी गई। उल्लेखनीय है कि जिला देवरिया में जनसंख्या का भार

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

अपेक्षाकृत बढ़ा है, परिणामस्वरूप अध्ययन क्षेत्र में नगरीय क्षेत्र में विस्तार के कारण आवास, परिवहन तथा संचार के साधनों में बाजार के विकास वहीं भूमि सुधार प्रबन्धन एवं सिंचाई के साधनों के विस्तार के कारण शुद्ध बोये गये क्षेत्रों में भी वृद्धि हुई है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Clowson, M. (1962): Urbad Spraw andspeculation in Suburban land Land Economics, 38.
2. Gole, U. (2006): Agricultural Intensity and Agricultureal Efficiency, The Social Profile, Vol.10 2006, Pp.9-16.
3. Joshi, Y.G. (1972): Agricultural Geography of the Narmada Basin, M.P. Hindi garanth Academy, Bhopal, Pp. 118. Hussain, Majid (2004): Agricultural Geography Rawat Publication Jaipur and Delhi. Singh, Jasbir (1974): Agricultural Atlas of India, Kurukshetra: Vishal Publication. Singh, B.B. (1979): Agricultural Geography, Tara publication, Varanasi, P.105.
4. Tyagi, B.S. (1972) Agricultural Intensity in Chunar Tahsil, Mirzapur, U.P. N.G.J.I. Vol., XVIII, Pp.42 and 48.
5. Stamp,L.D. (1938): Land Utilization and soil erosion in Nigeria, Geog. Rev.28,Pp.32-45.
6. Shafi, M (1960): Land Utilization of Eastern U.P. Aligarh: AMU Press.
7. Venzetti, C. (1972): Land Use and Natural Vegetation, in International Geography Edited by, Petre Adams and Fredrick, M. Helleiner, Toronto, University Press, Pp.1106.

*****